Merits and Demerits of Proportional and Progressive Tax.

आनुपातिक करों के तथा प्रगतिशील करों के मुख्य [illegible] हैं -

① आनुपातिक कर सबकी [illegible] क्षमता के अनुरूप [illegible] है। आनुपातिक करों के [illegible] के [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] के लिए आधार नहीं बनाया जाता है। [illegible] के [illegible] करों का भार [illegible] के [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] होता है। [illegible]

किन्तु प्रगतिशील कर [illegible] [illegible] करों का [illegible] [illegible] [illegible] पड़ता है।

② आनुपातिक करों में लोचता के गुणों का अभाव रहता है। आवश्यकता पड़ने पर सरकार इस कर के द्वारा अधिक आय प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि विभिन्न वर्गों के आय में वृद्धि होने पर आनुपातिक करों से प्राप्त आय में वृद्धि नहीं हो सकती है।

किन्तु प्रगतिशील कर में लोचता एवं उत्पादकता दोनों के गुण पाये जाते हैं। आवश्यकता पड़ने पर धनी वर्गों पर कर की दरों को बढ़ाकर सरकार अपनी आय को बढ़ा सकती है।

③ आनुपातिक कर प्रणाली में करों की प्राप्ति

प्रशासन द्वारा किया
आय कम रहती है किन्तु प्रशासन द्वारा किया अधिक रहता है।
गया ~~कर~~ लाभ अपेक्षाकृत अधिक रहता है। मितव्ययिता का अभाव
इसलिए इस प्रणाली में मितव्ययिता का अभाव
रहता है।

किन्तु प्रगतिशील कर अधिक मितव्ययी
होता है, क्योंकि जब प्रगतिशील कर का दर
बढ़ता है तो करों का collection करने का
व्यय नहीं बढ़ता।

(4) आनुपातिक कर करदान योग्यता पर आधारित
नहीं है क्योंकि धनी एवं गरीब वर्ग पर
समान कर की दर रहती है इसलिए आनुपातिक
कर न्यायोचित नहीं है।

किन्तु प्रगतिशील कर करदान
योग्यता पर आधारित है इसलिए यह न्यायोचित
है।

(5) समाज के आय एवं धन में वृद्धि होने से
उससे तेजी से उत्पादन एवं उपभोग बढ़ता है
जिससे कर की दर बढ़ती है। लेकिन आनुपातिक
कर प्रणाली में ये बात संभव नहीं है।

प्रगतिशील कर प्रणाली में बढ़ती हुई
आय के साथ प्रगतिशील कर की दर बढ़ती
है।

(6) आनुपातिक कर प्रणाली में सामाजिक नैतिकता
का अभाव रहता है क्योंकि गरीबों और अमीरों

में कर के दर समान रहते है लेकिन दोनों के आय में अन्तर होता है।

प्रगतिशील कर प्रणाली सामाजिक नैतिकता बनाये रखती है। क्योंकि यह ऊंचे कर की दर धनी वर्ग पर तथा कम दर की दर गरीब वर्ग पर लगाने की व्यवस्था करती है।

(7) आनुपातिक कर प्रणाली के द्वारा Funtional Finance का महत्व कम हो जाता है।

किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली Functional Finance का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। मुद्रा स्फीति के समय जनता के अत्यधिक क्रयशक्ति को इस कर के द्वारा घटाया जा सकता है।

आनुपातिक कर प्रणाली के ~~दोष~~ गुण एवं प्रगतिशील कर प्रणाली के दोष निम्नलिखित है-

(1) आनुपातिक कर प्रणाली में आय के वितरण में कोई परिवर्तन नहीं होता तथा विभिन्न करदाताओं की सापेक्षिक स्थिति पूर्ववत बनी रहती है।

किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली के द्वारा करदाताओं के सापेक्षिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है।

(2) आनुपातिक कर प्रणाली सरल होती है। तथा सभी प्रकार के आयों पर समान रूप से लागू होती है किन्तु प्रगतिशील कर प्रणाली में अधिकाधिक रूप से आय के विभिन्न वर्गों पर कर tax लगाया जाता है। जिसके फलस्वरूप प्रगतिशील करों की सरलता नष्ट हो जाती है

(3) कर की मात्रा में अनुचित मात्रा में वृद्धि पर रोक आनुपातिक कर प्रणाली के अन्तर्गत नहीं होती है। क्योंकि सरकार मनमाने ढंग से करें की मात्रा में अनुचित वृद्धि नहीं कर सकती है। चूंकि कर की दरें सभी प्रकार की आय के लिए समान होती है लेकिन प्रगतिशील कर को सरकार बढ़ा सकती है क्योंकि वह धनी पर अधिक और गरीबों पर कम लगाया जाता है

(4) आनुपातिक कर से कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। किन्तु प्रगतिशील प्रणाली के अन्तर्गत करों की दर इतनी ऊँची होती है जिससे कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(5) आनुपातिक कर समान त्याग के सिद्धान्त पर आधारित है इसलिए इसकी औचित्यता अधिक है। समाज के विभिन्न वर्गों के लिए कर का दर समान होता है किन्तु प्रगतिशील प्रणाली में समाज के विभिन्न आयवाले वर्गों के लिए भिन्न भिन्न कर की दरें होती है।

———x———

Dr Sandhya Rani